

क्या निराश हुआ जाये



विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

Central Institute of Educational Technology

National Council of Educational Research and Training

Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016

website - www.ciet.nic.in

Phone No. - 011-2664801-10, Ext.-159/160/432

निराश थे, पर घर नहीं बैठे हम



हमने दिया नियम 49-0 के अन्तर्गत **नापसन्दी** का वोट

यदि आप चुनाव में उतरे किसी भी उम्मीदवार को अपने वोट के कमिल नहीं पाते हैं तो घर पर बैठ कर मतदान का बहिष्कार ना करें बल्कि पोलिंग बुथ पर जाकर अपना 'ना पसन्दी' का वोट दर्ज करावाए।

मतदान केन्द्र में 17-A रजिस्टर में हस्ताक्षर द्वारा अपनी उपस्थिति दर्ज कराने व अपनी उमरी पर लाल रवाही अंकित करवाने के उपरान्त पीछलीन अधिकारी से नियम 49-0 के अन्तर्गत आप मींग कर सकते हैं कि आप किसी को भी वोट नहीं करना चाहते हैं अतएव वे आपका 'ना

पसन्दी' का वोट 17-A रजिस्टर पर दर्ज करें। नियम 49-0 के अन्तर्गत यह आपका वोट 'ना करने का अधिकार है।

ऐसा करके आप राजनीतिक पार्टियों को जलसा सकते हैं कि वे भ्रष्ट एवं आपराधिक व्यक्तियों को अपने दल एवं राजनीति से दूर रखें।

अभी मतदान मशीनी में 'ना पसन्दी' का वोट दर्ज करवाने के लिए बटन का प्राबधान नहीं है।

ना-पसन्दी का वोट बनाम लोकतन्त्र को स्रच्छ



समाज में बढ़ती हुई दूषित विचारधारा

सामाजिक सुख शांति के लिये केवल राज दण्ड अथवा राज नियमों पर निर्भर रहा जा सकता और न उसकी स्थापना मात्र निन्दा करते रहने से ही सम्भव है। राजदण्ड, राज नियम और सामूहिक निन्दा भी आवश्यक है, उनकी उपयोगिता भी कम नहीं है, तथापि यह समाज में व्याप्त पापों और अपराधों का पूर्ण उपचार नहीं है। इसके साथ निरपराध एवं निष्पाप समाज की रचना के लिये मनुष्यों के आन्तरिक स्तर का सद्विचारों से भरापूरा रहना भी आवश्यक है। मनुष्यों का अन्तर जब तक स्वयं ही उज्ज्वल व सदाशयतापूर्ण न होगा, निष्पाप समाज की रचना का स्वप्न अधूरा ही बना रहेगा। राज नियमों के प्रति आदर, निन्दा के प्रति भय और समाज के प्रति निष्ठा भी तो ऐसे व्यक्तियों में होती है, जिनके हृदय उदार और उज्ज्वल होते हैं।

दूषित विचारधारा का कारण

संसार में सारे कष्टों की जड़ कुकर्म ही होते हैं, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं संसार में जिस परिमाण से कुकर्म बढ़ेंगे, दुःख क्लेश भी उसी मात्रा में बढ़ते जायेंगे यदि संसार में सुख शांति की स्थापना वाँछनीय है तो पहले कुकर्मों को हटाना होगा। कुकर्मों को घटने, हटाने और मिटाने का एक ही उपाय है कि मनुष्य की विचार धारा में आदर्शवाद का समावेश किया जाये। मस्तिष्क को घेरे रहने वाली अनैतिक एवं अवांछनीय विचार धारा ही कुकर्मों को जन्म दिया करती है। यदि विचार सही और शुद्ध हों तो मनुष्य से कुकर्म बन पड़ने की सम्भावना नहीं रहती।

निराश क्यों होना चाहिए

इन दिनों भ्रष्टाचार से जुड़े जितने मामले प्रकाश में आए हैं और जिस तरह सरकार द्वारा उन पर पर्दा डालने की लगातार कोशिश की जाती रही है उससे जनता में इस सरकार और प्रधानमंत्री के प्रति असंतोष गहराता जा रहा है। कोयला खंड आबंटन मामले की जांच कर रही केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की रिपोर्ट में संभावित धांधली पर उच्चतम न्यायालय की टिप्पणी भी उसी असंतोष को स्वर देती है।



समाचार - पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले - भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करनेवाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मुखता का पर्याय समझा जाने लगा है, सचाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।



निराश क्यों नहीं होना चाहिए

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर- भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है । अब भी सेवा, ईमानदारी, सचाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं । वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं । आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीडा पहुँचाने को पाप समझता है । हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है । समाचार पत्रों में जो म्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं ।

उदाहरण

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी - जल्दी गाडी में आकर बैठ गया । थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिबे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नबे रुपये रख दिए और बोला, "यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा । "उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी ।



कैसे कहें कि मनुष्यता एकदम
समाप्त हो गई! कैसे कहें कि लोगों
में दया - माया रह ही नहीं गई !

इसलिए हमें निराश होने की
जरूरत नहीं है ।

